संपादकीय

भारतीय इतिहास का शाश्वत कुहासा इन दिनों अपने सबसे घनीभूत, भ्रामक व संक्रामक दौर से गुजर रहा है। ज्यादातर महत्त्वपूर्ण परिभाषिक शब्दों की भांति इतिहास अर्थात 'हिस्ट्री' शब्द भी यूनानी भाषा के 'हस्टोरिया' शब्द से निकला है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है अन्वेषण, शोध, खोज या जानकारी। किंतु इतिहास के बारे में विश्वविजेता नेपोलियन बोनापार्ट का यह प्रसिद्ध विचार सच्चाई के सबसे निकट प्रतीत होता है कि, ''इतिहास, असत्यों पर एकत्र की गयी सहमति मात्र है।'' यह दीगर बात है कि आज के दौर में जब ख़ेमेबाज़ इतिहासकारों के कंधों पर बैठे कई देशी-विदेशी सम्राट विश्वविजेता के पुख्ता दावों की तख्तियां लिए घूम रहे हैं,बेचारे नेपोलियन बोनापार्ट अपने विश्व-विजेता की उपाधि और ख्याति को कब तक बचा पाते हैं। इतिहास को लेकर द्वंद कोई नया मुद्दा नहीं है। ब्रिटिश साम्राज्यवाद के औपनिवेशिक काल के दरमियान ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारी जेम्स मिल के द्वारा छह खंडों में लिखे गए ब्रिटिश भारत का इतिहास 'हिस्ट्री' को भले ही उस काल में रिकार्डो मैकाले तथा अन्य विद्वान इसे महानतम ऐतिहासिक कृति मानें, किंतु असलियत तो यही है कि इसने भारत के सांस्कृतिक, राजनैतिक, इतिहास के वास्तविक स्वरूप को पूरी तरह से धूसर तथा धुंधला कर दिया। दरअसल मिल भारत का इतिहास लिखने के पहले ही निष्कर्षों पर पहुंच चुके थे, और यह केवल उनकी अज्ञानता, विजय दर्प तथा पुष्ट पूर्वाग्रह मात्र नहीं था, दरअसल यह तत्कालीन ब्रिटिश साम्राज्यवाद के लक्ष्यों तथा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बेहद जरूरी साधन भी था।

आदिवासी समाज आत्मनिर्भर समाज है

पत्रकार, लेखक, संपादक, समाजसेवी और प्रखर वक्ता **वासवी किड़ो** से **कुसुमलता सिंह** की बातचीत

प्र. आप पत्रकारिता, लेखन, संपादन के अतिरिक्त समाज सेवा से जुड़ी रही हैं। आदिवासी मंत्रालय, पर्यावरण एवं जंगलात मंत्रालय की विभिन्न कमेटियों की सदस्य, झारखंड राज्य महिला आयोग की सदस्य जैसे महत्वपूर्ण जगहों पर रही हैं। मेरा प्रश्न है कि आदिवासी के पास जल, जंगल, जमीन है, अपनी भाषा और संस्कृति है। क्या आपको नहीं लगता है कि इस सबके बावजूद भी आज उन्हें नई नीतियों के तहत परजीवी बनाया जा रहा है!

वासवी किड़ो फिलीपिन्स के प्रतिनिधियों के साथ

उ. आदिवासियों को हजारों सालों से परजीवी बनाने की कोशिश की जाती रही है। आज की नीतियां कार्यक्रम और योजनाएं उन्हें केवल और केवल परजीवी बनाने के लिए हैं। आदिवासी समाज आत्मनिर्भर समाज है। स्वावलंबन की उनकी चिरस्थायी व्यवस्था है। जंगल और जमीन आश्रित जीवन जीविका संस्कृति और परंपरा है। ऐसे में बाहरी नीतियों कार्यक्रमों और योजनाओं का हमला झेलने के बावजूद भी आदिवासी समाज अचल, अटल है। अपने अस्तित्व के लिए लगातार संघर्षरत है। सबसे ताजा उदाहरण तो नोवल कोरोना वायरस को लेकर देती हूं। प्राकृतिक जीवन जीने वाले आदिवासियों को इस वायरस से कोई खतरा नहीं है। प्रकृति से मिलनेवाले उतना ही जीना सरल होगा। आदिवासी अस्मिता के कारण ही आज वे दूसरों से जीवन के हर क्षेत्र में भिन्न हैं। उनके सोचने के तरीके और जीवन का हर व्यवहार, सामुदायिक रिश्ते आदिवासियों को दूसरों से भिन्न बनाते हैं।

परजीवी बनाने की प्रक्रिया में आदिवासियों को विकास के नाम पर उजाड़ने यानी विस्थापित करने का जो सिलसिला औपनिवेशिक काल और उसके बाद आजादी के प्रारंभिक काल से चला आ रहा है। वह अत्यंत ही दुखदायी है। विकास के नाम पर ऐसा मानव नरसंहार तो इतिहास में

कुसुमलता सिंह
प्रधान संपादक 'ककसाड़'
मो. 099682-88050

चिकित्सा सुविधा का उपलब्ध न होना उन्हें मौत की ओर धकेलने के लिए काफी है।